पाठ - 10 भारति, जय, विजयकरे

प्रश्न - उत्तर

रचना से संवाद: मेरे उत्तर मेरे तर्क

1. "भारति, जय, विजयकरे" कविता में विशेष रूप से—

(क) भारत की भौगोलिक संरचना की प्रशस्ति की गई है।

(ख) भारत की सांस्कृतिक विविधता बताई गई है।

(ग) भारत के ज्ञान, प्रकृति और संपन्नता की प्रशंसा की गई है।

(घ) भारत के खनिज पदार्थों के बारे में बताया गया है।

- **उपयुक्तता का तर्क:** यह उत्तर पूर्णतः उपयुक्त है क्योंकि कविता में जहाँ एक ओर 'कनक-शस्य' के माध्यम से कृषिगत संपन्नता को दिखाया गया है, वहीं दूसरी ओर 'गंगा', 'हिमालय' के माध्यम से प्रकृति और 'प्रणव ओंकार' के माध्यम से भारत के महान ज्ञान व आध्यात्मिक दर्शन की सामूहिक वंदना की गई है।

2. "कनक-शस्य-कमल धरे" पंक्ति का भावार्थ है—

(क) भारत की धन-धान्य संपन्नता

(ख) भारत की नदियों का सौंदर्य

(ग) भारत के लोक-जीवन की सुंदरता

(घ) भारत की सैन्य शक्ति और औद्योगिक विकास

- **उपयुक्तता का तर्क:** 'कनक-शस्य' का शाब्दिक अर्थ है सोने के समान मूल्यवान चमकीली फसलें। यह प्रतीक प्रत्यक्ष रूप से भारत की धरती की उर्वरा शक्ति, खेतों की प्रचुर पैदावार और अन्न के माध्यम से मिलने वाली आर्थिक व सामाजिक धन-धान्य संपन्नता को प्रकट करता है।

3. समस्त विश्व में भारत के महत्व का उद्घोष करने वाली पंक्तियाँ हैं—

(क) गंगा ज्योतिर्जल-कण/ धवल धार हार गले

(ख) गर्जितोर्मि सागर-जल/धोता शुचि चरण युगल

(ग) भारति, जय, विजयकरे/कनक-शस्य-कमलधरे !

(घ) ध्वनित दिशाएँ उदार/शतमुख-शतरव-मुखरे!

- **उपयुक्तता का तर्क:** ये पंक्तियाँ सिद्ध करती हैं कि भारत का महत्व केवल उसकी सीमाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि इसकी उदारता और सैकड़ों मुखों से निकलने वाले विभिन्न कल्याणकारी व दार्शनिक विचार संपूर्ण विश्व की दिशाओं को गूँजित और प्रभावित करते हैं।

4. कविता की भाषा और शैली किस विशेषता से संपन्न है?

(क) सरल, बोल-चाल की भाषा

(ख) संस्कृतनिष्ठ और समासयुक्त

(ग) सरस और हास्य-व्यंग्यपूर्ण

(घ) संवादात्मक और विश्लेषणात्मक

- **उपयुक्तता का तर्क:** निराला जी की यह छायावादी रचना 'तत्सम' शब्दावली से ओतप्रोत है। इसमें 'गर्जितोर्मि', 'ज्योतिर्जल-कण', 'हिम-तुषार' जैसे गंभीर संस्कृतनिष्ठ शब्दों और सामासिक पदों का सुंदर व कड़ा प्रयोग किया गया है जो कविता को उच्च साहित्यिक गांभीर्य प्रदान करता है।

5. भारत के वस्त्रों में 'तरु-तृण-वन-लता' और गले में 'गंगा-धारा' को चित्रित कर कवि किस प्रकार की चेतना का संदेश देते हैं?

(क) पर्यावरणीय और सांस्कृतिक

(ख) राष्ट्रीयता और देशप्रेम

(ग) ऐतिहासिक और भौगोलिक

(घ) सामाजिक और राजनीतिक

- **उपयुक्तता का तर्क:** वृक्ष, वन और घास (तरु-तृण-वन-लता) सीधे पर्यावरण और प्रकृति के संरक्षण की चेतना को दर्शाते हैं, जबकि गंगा नदी को एक पवित्र देव-स्वरूप मानकर गले का हार बनाना भारत की प्राचीन सांस्कृतिक और आध्यात्मिक चेतना का सर्वोत्तम संदेश है।

<u>अर्थ और भाव</u>

प्रश्न (क) "लंका पदतल शतदल,
गर्जितोर्मि सागर-जल
धोता शुचि चरण युगल !"

- **अर्थ:** भारतभूमि के दक्षिण में स्थित लंका इसके पैरों के नीचे एक सुंदर कमल के समान सुशोभित है और समुद्र का गर्जना करता हुआ जल निरंतर भारतमाता के दोनों पवित्र चरणों को धो रहा है।
- **भाव स्पष्टीकरण:** इन पंक्तियों में कवि ने भारत का एक अत्यंत भव्य मानवीकृत और भौगोलिक चित्र खींचा है। भाव यह है कि भारतभूमि साक्षात् एक जाग्रत देवी है, जिसकी विराटता के सामने स्वयं विशाल महासागर एक विनीत सेवक की भांति उसकी लहरों की गूँज से चरण-वंदन कर रहा है। यह पंक्तियाँ राष्ट्र के प्रति सर्वोच्च आदर और उसकी भौगोलिक अखंडता को दर्शाती हैं।

प्रश्न (ख) "प्राण प्रणव ओंकार,
ध्वनित दिशाएँ उदार,
शतमुख-शतरव-मुखरे!"

- **अर्थ:** भारत के प्राणों में साक्षात् पवित्र 'ओंकार' की ध्वनि बसती है, जिससे इसकी सभी दिशाएँ उदारता से गूँज रही हैं और यहाँ का समाज सैकड़ों मुखों से निकलने वाले विविध ज्ञानपूर्ण विचारों से मुखरित है।
- **भाव स्पष्टीकरण:** इन पंक्तियों का गहरा दार्शनिक भाव यह है कि भारत केवल एक जड़ भूमि का टुकड़ा नहीं बल्कि एक महान आध्यात्मिक सत्ता है। भारत की आत्मा का मूल आधार 'ओंकार' और 'वसुधैव कुटुंबकम्'

की उदारता है, जहाँ विभिन्न भाषाओं, संस्कृतियों और अनेक प्रकार के विचारों को एक साथ फलने-फूलने का समतावादी अवसर प्राप्त होता है।

मेरी समझ मेरे विचार

प्रश्न 1. कविता में कवि की किस भावना की अभिव्यक्ति मिलती है?

- **उत्तर:** "पाठ - 10 भारति, जय, विजयकरे !." कविता में महाकवि निराला की **अगाध राष्ट्रभक्ति, सांस्कृतिक गौरव, प्रकृति-प्रेम और भारत को विश्व-गुरु के रूप में देखने की तीव्र आकांक्षा** की अभिव्यक्ति मिलती है। कवि भारत को पराधीनता की बेड़ियों से मुक्त कर संपूर्ण विश्व में विजयश्री प्राप्त करने की कामना करते हैं। उनकी भावना में भारत केवल एक भौगोलिक देश नहीं, बल्कि ज्ञान, अध्यात्म, कृषि और प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण एक जाग्रत और पूजनीय ईश्वरीय चेतना है।

प्रश्न 2. कविता में भारत के प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन किस प्रकार किया गया है? क्या आप मानते हैं कि प्रकृति का संरक्षण करना भी देशप्रेम का काम है? क्यों?

- **उत्तर:** कविता में भारत के प्राकृतिक सौंदर्य का **अत्यंत भव्य मानवीकरण** किया गया है। कवि ने वृक्षों, वनों और लताओं को भारतमाता के वस्त्र बताया है, गंगा नदी को गले का निर्मल हार और बर्फ से ढके हिमालय को मस्तक का उज्ज्वल मुकुट चित्रित किया है।
- **मेरा विचार:** हाँ, मैं शत-प्रतिशत मानता हूँ कि प्रकृति का संरक्षण करना भी देशप्रेम का एक अनिवार्य हिस्सा है। देश केवल सीमाओं या नक्शे की लकीरों से नहीं बनता, बल्कि वह वहाँ की नदियों, जंगलों, पर्वतों और मिट्टी से बनता है। यदि हम अपने देश की नदियों (जैसे गंगा) को प्रदूषित करेंगे, वनों को काटेंगे, तो हम सीधे तौर पर भारतमाता के स्वरूप और उसके प्राकृतिक आभूषणों को खंडित करेंगे। प्रकृति सुरक्षित रहेगी, तभी देश के नागरिक स्वस्थ और संपन्न रहेंगे, अतः पर्यावरण की रक्षा करना हमारा सर्वोच्च राष्ट्रीय कर्तव्य है।

प्रश्न 3. "कनक-शस्य-कमलधरे!" पंक्ति भारतभूमि की किन-किन विशेषताओं की ओर संकेत कर रही है?

- **उत्तर:** यह पंक्ति भारतभूमि की निम्नलिखित तीन महान विशेषताओं की ओर संकेत करती है:
    1. **धन-धान्य और कृषि संपन्नता:** 'कनक-शस्य' का अर्थ है सोने जैसी चमकीली और मूल्यवान फसलें, जो यह दर्शाती हैं कि भारत की मिट्टी प्रचुर अन्न और संपदा उत्पन्न करने वाली अत्यंत उर्वरा भूमि है।
    2. **श्रम का सौंदर्य:** यह पंक्ति भारत के कोटि-कोटि किसानों और श्रमिकों के कड़े परिश्रम का आदर करती है, जिनके स्वेद (पसीने) से धरती हरी-भरी होती है।
    3. **सांस्कृतिक व आध्यात्मिक पवित्रता:** हाथ में 'कमल' धारण करना भारत की ज्ञान-परंपरा, लक्ष्मी-सरस्वती के वास और कीचड़ में भी पवित्र बने रहने के दार्शनिक जीवन-मूल्यों को रेखांकित करता है।

प्रश्न 4. "मुकुट शुभ्र हिम-तुषार" पंक्ति में हिमालय को भारत का मुकुट बताया गया है, क्यों?

- **उत्तर:** मुकुट हमेशा किसी भी राजा या देवी के मस्तक पर सबसे ऊँचे स्थान पर सुशोभित होता है और उसकी संप्रभुता, गौरव तथा भव्यता का प्रतीक होता है। ठीक उसी प्रकार, **हिमालय पर्वत भारत की उत्तरी सीमा पर**

सर्वोच्च स्थान पर स्थित है। उसकी ऊंची-ऊंची चोटियाँ साल-भर सफ़ेद और चमकीली बर्फ (हिम-तुषार) से ढकी रहती हैं, जो देखने पर साक्षात् भारतमाता के सिर पर सजे हुए एक चांदी या श्वेत मणियों से जड़े उज्ज्वल मुकुट जैसी भव्य और दिव्य दिखाई देती हैं। यह भारत की अडिगता और उसके मस्तक के सर्वोच्च गौरव को प्रदर्शित करता है।

विधा से संवाद: कविता का सौंदर्य

पाठ्यपुस्तक के मानदंडों के अनुसार कविता के कलात्मक एवं छायावादी सौंदर्य का विवरणात्मक चार्ट:

काव्य सौंदर्य की विशिष्टता	विशेषता का साहित्यिक अर्थ	पाठ्यपुस्तक से सटीक प्रामाणिक उदाहरण
प्रकृति का मानवीकरण	जड़ प्रकृति पर मानवीय क्रियाओं या वस्त्राभूषणों का सीधा आरोप करना।	*"तरु-तृण-वन-लता वसन, / अंचल में खचित सुमन;"*
आलंकारिक प्रयोग	भाषा के सौंदर्य और नाद-सौंदर्य को बढ़ाने के लिए अलंकारों का प्रयोग।	*"गंगा ज्योतिर्जल-कण / धवल धार हार गले।"*
समस्त पद / सामासिक पद	कम से कम शब्दों में व्यापक अर्थ को संक्षिप्त रूप में बाँधना।	*"कनक-शस्य-कमलधरे!"*
संस्कृतनिष्ठ भाषा प्रयोग	तत्सम शब्दावली का गंभीर और पांडित्यपूर्ण उपयोग करना।	*"लंका पदतल शतदल, / गर्जितोर्मि सागर-जल"*

विषयों से संवाद

प्रश्न 1. वर्तमान संदर्भ में यदि आपको भारत को एक नए रूप में प्रस्तुत करने का अवसर मिले तो आप भारत की किन विशेषताओं और विविधताओं को सम्मिलित करेंगे?

- **उत्तर:** वर्तमान २१वीं सदी के आधुनिक परिप्रेक्ष्य में यदि मुझे भारत को एक नए रूप में प्रस्तुत करने का अवसर मिले, तो मैं निराला जी द्वारा वर्णित ज्ञान और कृषि के साथ-साथ निम्नलिखित आधुनिक विशेषताओं को अवश्य सम्मिलित करूँगा:
    1. **तकनीकी और डिजिटल शक्ति (Digital India):** भारत आज केवल खेतों का देश नहीं, बल्कि अंतरिक्ष विज्ञान (ISRO), सूचना तकनीक (IT) और वैश्विक डिजिटल क्रांति का एक सशक्त केंद्र है।
    2. **युवा शक्ति (Demographic Dividend):** भारत विश्व का सबसे युवा देश है, जिसकी मेधा और नवाचार (Startups) संपूर्ण विश्व को नई दिशा दे रहे हैं।
    3. **वैज्ञानिक आत्मनिर्भरता:** चिकित्सा, स्वदेशी रक्षा उपकरणों और हरित सौर ऊर्जा (Solar Energy) के क्षेत्र में भारत का बढ़ता आत्मनिर्भर कदम।

प्रश्न 2. "शतमुख-शतरव-मुखरे!" पंक्ति में भारत के विविध पर्व, उत्सव और रीति-रिवाज किस प्रकार 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' की संकल्पना को साकार करते हैं?

- **उत्तर:** 'शतरव' का अर्थ है सैकड़ों विभिन्न आवाजें या विचार। भारत में कश्मीर से कन्याकुमारी तक अनेक भाषाएँ, बोलियाँ, पर्व (जैसे- दीवाली, ईद, पोंगल, ओणम, बैसाखी) और विभिन्न रीति-रिवाज पाए जाते हैं। जब ये सभी सांस्कृतिक रंग एक साथ मिलते हैं, तो इनमें कोई अलगाव नहीं होता, बल्कि ये सभी मिलकर एक ही तिरंगे और एक ही राष्ट्र-भावना के अंतर्गत धड़कते हैं। यह विविधता भारत को कमज़ोर नहीं करती, बल्कि उसे बहुसांस्कृतिक रूप से और समृद्ध करती है, जो 'विविधता में एकता' अर्थात् **'एक भारत, श्रेष्ठ भारत'** की मूल आत्मा को साकार करती है।

प्रश्न 3. भारत को सुदृढ़ करने में इसकी प्रकृति, संस्कृति और ज्ञान-परंपरा के महत्व को बताते हुए संक्षिप्त लेख लिखिए।

- **उत्तर: भारत की सुदृढ़ता के तीन मुख्य स्तंभ**

भारत की वास्तविक शक्ति उसकी सैन्य या औद्योगिक शक्ति मात्र में नहीं, बल्कि उसकी प्रकृति, संस्कृति और सनातन ज्ञान-परंपरा के त्रिवेणी संगम में निहित है। हमारे देश की **प्रकृति** (हिमालय, गंगा और विशाल वन) केवल भौगोलिक ढाँचा नहीं हैं, बल्कि ये हमारे जनजीवन को जल, अन्न और प्राणवायु देकर आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर और सुदृढ़ बनाती हैं। हमारी **संस्कृति** 'वसुधैव कुटुंबकम्' और सर्वधर्म समभाव की भावना पर आधारित है, जो इतने बड़े बहुभाषिक देश को आंतरिक रूप से शांति और भाईचारे के अटूट सूत्र में बाँधकर रखती है। अंत में, भारत की **ज्ञान-परंपरा** (वेदों, उपनिषदों से लेकर शून्य की खोज और आधुनिक विज्ञान तक) ने विश्व को सदैव अंधकार से निकालकर सत्य का मार्ग दिखाया है, जिसके कारण भारत को 'विश्व-गुरु' का आदरणीय स्थान मिला। इन तीनों का संरक्षण करके ही हम भारत को एक महाशक्ति के रूप में सुदृढ़ रख सकते हैं।

प्रश्न 4. बढ़ते प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन ने हमारी नदियों और हिमालय को किस प्रकार प्रभावित किया है?

- **उत्तर:** आज बढ़ते औद्योगीकरण, अंधाधुंध शहरीकरण और मानवीय लापरवाही के कारण निराला जी द्वारा वर्णित भारत के ये सुंदर आभूषण गंभीर संकट में हैं:
    - **हिमालय पर प्रभाव (मुकुट का पिघलना):** वैश्विक तापन (Global Warming) और जलवायु परिवर्तन के कारण हिमालय के ग्लेशियर बहुत तेज़ी से पिघल रहे हैं, जिससे 'मुकुट शुभ्र हिम-तुषार' की धवलता कम हो रही है और भविष्य में जल संकट का खतरा बढ़ गया है।
    - **नदियों पर प्रभाव (गंगा का संदूषण):** कारखानों के ज़हरीले रसायनों और प्लास्टिक कचरे के कारण गंगा का 'ज्योतिर्जल' आज कुरुचि और गंदगी का शिकार हो रहा है। नदियों का जल स्तर घट रहा है और उनका अस्तित्व संकट में है, जो हमारी पूरी कृषि और संस्कृति के लिए एक गंभीर चेतावनी है।

सृजन (Creative Projects)

1. भारतमाता का अपनी राजकीय/प्रांतीय सांस्कृतिक वेशभूषा में भव्य अलंकरण

उत्तर - यदि मुझे भारतमाता को साक्षात् मानव रूप में कल्पित करके अपने राज्य (**दिल्ली/उत्तर भारत**) की सांस्कृतिक धरोहर से सुसज्जित करने का अवसर मिले, तो मैं उनकी साज-सज्जा निम्नलिखित प्रकार से करूँगा:

- **वेशभूषा:** मैं भारतमाता को उत्तर भारत के पारंपरिक गौरव को दर्शाती हुई गहरे लाल और सुनहरे ज़री के काम वाली भव्य **बनारसी सिल्क साड़ी** पहनाऊँगा, जो हमारी श्रम-परंपरा और बुनकरों के कौशल का प्रतीक है।
- **आभूषण:** उनके कानों में मीनाकारी वाले सुंदर कश्मीरी झुमके, हाथों में दिल्ली के शिल्प-बाज़ार की काँच और लाख की पारंपरिक बहुरंगी चूड़ियाँ और पैरों में गंगा की मिट्टी से बने पवित्र पायज़ेब सुशोभित होंगे।
- **चिह्न व पुष्प:** उनके माथे पर रोली और चंदन का प्रांतीय तिलक होगा। उनके हाथों में दिल्ली का राजकीय पुष्प **'गुलदाउदी'** और आँचल में महकते हुए ताज़े गुलाब के फूलों का सुंदर हार होगा जो देश की विविध संस्कृतियों के सौहार्द को प्रदर्शित करेगा।

2. भारत पर आधारित एक डाक टिकट, पोस्टर या पुस्तक का आवरण पृष्ठ (कवर पेज) बनाइए। साथ ही यह भी बताइए कि आप उसमें किन-किन प्रतीकों को शामिल करेंगे और क्यों?

उत्तर - आवरण पृष्ठ का विवरण और प्रतीक विधान

यह पुस्तक आवरण (या पोस्टर) 'भारत माता' को एक चेतन और दिव्य सत्ता के रूप में दर्शाता है, जो भारत के प्राकृतिक भूगोल को अपने रूप में समाहित किए हुए हैं।

शामिल किए गए मुख्य प्रतीक और उनका औचित्य:

1. **हिमालय (मुकुट):** आवरण के शीर्ष पर, भारत माता का मुकुट बर्फ से ढके हिमालय की चोटियों से बना है।
    - **क्यों?** कविता की पंक्ति "मुकुट शुभ्र हिम-तुषार" के अनुसार, हिमालय भारत का गौरव और उसका रक्षक मुकुट है।
2. **गंगा (हार):** उनके गले में मोतियों जैसा चमकता हुआ हार गंगा नदी की श्वेत धारा को दर्शाता है।
    - **क्यों?** कविता में गंगा को "धवल धार हार गले" कहा गया है, जो पवित्रता और जीवनदायिनी शक्ति का प्रतीक है।
3. **वनस्पति और वस्त्र:** भारत माता के वस्त्र (साड़ी) हरे-भरे जंगलों, घासों और रंग-बिरंगे फूलों से बने हैं।
    - **क्यों?** यह "तरु-तृण-वन-लता वसन" और "अंचल में खचित सुमन" पंक्तियों को दर्शाता है, जो भारत की समृद्ध प्राकृतिक संपदा और जैव विविधता के प्रतीक हैं।
4. **ओंकार (प्रणव ध्वनि):** पृष्ठभूमि में उगते सूर्य के पास एक दिव्य 'ॐ' का प्रतीक गूंजता हुआ दिखाई दे रहा है, जिससे किरणें निकल रही हैं।
    - **क्यों?** यह "प्राण प्रणव ओंकार" और "ध्वनित दिशाएँ" पंक्तियों का प्रतीक है, जो भारत के आध्यात्मिक ज्ञान और मानवता के लिए इसके संदेश का प्रतिनिधित्व करता है।
5. **स्वर्णिम फसलें और कमल:** भारत माता के एक हाथ में पकी हुई सोने जैसी फसल (गेहूँ) की बालियाँ और दूसरे हाथ में कमल का फूल है।
    - **क्यों?** "कनक-शस्य-कमलधरे!" पंक्ति के अनुसार, यह भारत की कृषि समृद्धि (धन-धान्य) और कमल के माध्यम से पवित्रता और सौंदर्य का प्रतीक है।
6. **सागर (चरण और श्रीलंका):** उनके चरणों के नीचे गर्जना करता हुआ विशाल सागर है, जिसकी लहरें उनके चरणों को छू रही हैं। सागर में नीचे की ओर श्रीलंका का द्वीप एक कमल के रूप में दिखाई दे रहा है।
    - **क्यों?** यह पूरी तरह से "लंका पदतल शतदल, गर्जितोर्मि सागर-जल, धोता शुचि चरण युगल" पंक्तियों पर आधारित है, जो भारत की दक्षिणी सीमा, उसकी विशालता और समुद्र के द्वारा भारत माता के चरणों की वंदना को दर्शाता है।

3. पवित्र गंगा नदी की उद्गम से सागर-संगम तक की विहंगम 'नदी की यात्रा' (यात्रा-वृत्तांत)

उत्तर -

पतित-पावनी गंगा: गंगोत्री से गंगासागर तक की विचार यात्रा

गंगोत्री से ऋषिकेश (पर्वतीय सौंदर्य): मेरी यात्रा का प्रारंभ हिमालय की गोद में स्थित 'गोमुख' ग्लेशियर से होता है, जहाँ भागीरथी के रूप में गंगा का 'ज्योतिर्जल' अत्यंत तीव्र वेग और भयंकर गर्जना के साथ उबड़-खाबड़ चट्टानों को काटता हुआ आगे बढ़ता है। देवप्रयाग में जब अलकनंदा और भागीरथी का पवित्र संगम होता है, तब इसका नाम 'गंगा' पड़ता है। ऋषिकेश और हरिद्वार के पर्वतीय मोड़ों पर इसके दोनों ओर चीड़ और देवदार के झुरमुट दिखाई देते हैं। हरिद्वार के हर की पौड़ी पर संध्या समय जब हज़ारों दीये इसकी धवल धार पर तैरते हैं, तो ऐसा लगता है मानो साक्षात् आकाश के तारे धरती पर उतर आए हों।

मैदानी भागों की यात्रा (कृषि और संस्कृति): हरिद्वार से निकलकर गंगा उत्तर भारत के विशाल मैदानी भागों (उत्तर प्रदेश और बिहार) में प्रवेश करती है। यहाँ आकर गंगा का स्वरूप अत्यंत धीर, गंभीर और शांत हो जाता है। इसके

दोनों किनारों पर दूर-दूर तक फैले 'कनक-शस्य' (सोने जैसी फसलें) के हरे-भरे खेत इसकी उर्वरा शक्ति की कहानी सुनाते हैं। प्रयागराज में यमुना और मूक सरस्वती के साथ इसका त्रिवेणी संगम होता है, जहाँ कुंभ के समय करोड़ों श्रद्धालु आस्था की डुबकी लगाते हैं। काशी (वाराणसी) के घाटों पर गूँजती वेद-ध्वनियाँ और घंटियाँ इसके सांस्कृतिक गांभीर्य को और बढ़ा देती हैं। यहाँ की भाषाई विविधता भी अनूठी है; पर्वतों की गढ़वाली से शुरू होकर यह यात्रा अवधी, भोजपुरी और मैथिली की मधुर ध्वनियों से मुखरित होती हुई आगे बढ़ती है।

बंगाल की खाड़ी में विलीन होना (अंतिम ठहराव): बिहार को पार कर गंगा पश्चिम बंगाल में प्रवेश करती है, जहाँ इसकी भाषा बांग्ला के मधुर 'शतरव' में बदल जाती है। यहाँ यह हुगली और पद्मा नामक धाराओं में विभाजित होकर विशाल 'सुंदरवन डेल्टा' का निर्माण करती है। अंततः 'गंगासागर' पर पहुँचकर यह पवित्र नदी अत्यंत विनीत भाव से स्वयं को बंगाल की खाड़ी के असीम महासागर में विलीन कर देती है। गंगा की यह पूरी यात्रा सिद्ध करती है कि वह केवल एक नदी नहीं, बल्कि भारत की प्रकृति, कृषि, भाषाई विविधता और अमर संस्कृति को जोड़ने वाला साक्षात् दिव्य सूत्र है।

भाषा से संवाद (व्याकरण खंड)

बहुभाषिक देश हमारा (मातृभाषा और हिंदी का सजीव संवाद)

एक सचेत नागरिक के रूप में पर्यावरण और संस्कृति की रक्षा हेतु भारतमाता के साथ किया गया लघु संवाद:

- **हिंदी रूप (Standard Hindi):**

मैं (नागरिक): "हे भारतमाता! आज तकनीकी प्रगति के इस दौर में भी मैं आपके वनों, पर्वतों और पवित्र नदियों को प्रदूषण से बचाने के लिए पूरी तरह प्रतिज्ञाबद्ध हूँ।"

भारतमाता: "पुत्र! मेरा वास्तविक गौरव तुम्हारी इसी पर्यावरणीय चेतना और सभी भाषाओं व संस्कृतियों के प्रति आदर भाव रखने में ही सुरक्षित है।"

भाषा से संवाद (भाषा और भाव)

प्रश्न: "स्तव कर बहु-अर्थ-भरे" — उपर्युक्त पंक्ति में भारत की प्रशंसा विविध अर्थों में की गई है। आप भी अपनी मातृभाषा में भारत की स्तुति के लिए एक कविता की रचना कीजिए और उसका भावार्थ हिंदी में भी लिखिए।

मातृभाषा (हिंदी) में भारत-स्तुति कविता

शीर्षक: नमन तुझे, हे भारत भूमि!

मस्तक पर हिम-किरीट सुहाए, चरण निरंतर सिंधु धुलवाए।
गंगा-यमुना की अविरल धारा, सींचे आँचल हरा-हमारा॥
विविध रंग की भाषा-बोली, यहाँ मने दीवाली-होली।
अनेकता में एकता की गाथा, जग में ऊँचा इसका माथा॥
ज्ञान-दीप की आदि प्रदाता, विश्व-बंधुत्व की प्रखर विधाता।
कोटि-कोटि जन शीश झुकाते, जय हो, जय हो भारत माता॥

कविता का भावार्थ

- **प्रथम पद का भाव:** हमारी मातृभूमि भारत के मस्तक पर हिमालय रूपी मुकुट सुशोभित है और इसके पवित्र चरणों को समुद्र निरंतर धोता रहता है। यहाँ बहने वाली गंगा और यमुना जैसी पवित्र नदियाँ इसके मैदानी अंचलों को हरा-भरा और समृद्ध बनाती हैं।
- **द्वितीय पद का भाव:** भारत में विभिन्न संस्कृतियाँ, भाषाएँ और त्योहार (जैसे होली-दिवाली) हैं। यह विविधताओं का देश होने के बावजूद 'अनेकता में एकता' के अटूट सूत्र में बँधा है, जो इसे पूरे विश्व में गौरवपूर्ण स्थान दिलाता है।
- **तृतीय पद का भाव:** भारत संसार को सबसे पहले ज्ञान का प्रकाश देने वाली और 'वसुधैव कुटुंबकम्' (विश्व-बंधुत्व) का पाठ पढ़ाने वाली भूमि है। ऐसी परम वैभवशाली भारत माता के चरणों में देश के करोड़ों नागरिक आदरपूर्वक शीश झुकाते हैं।

समास: समस्त पद एवं विग्रह

निबंध और व्याकरण के नियमों के अनुसार कविता में आए सामासिक पदों का पूर्ण प्रामाणिक विग्रह और उनके भेदों के नाम निम्नलिखित हैं:

1. **शतदल**
    - *सटीक समास विग्रह:* शत (सौ) दलों (पंखुड़ियों) का समूह या समाहार।
    - *समास का नाम:* **द्विगु समास** (पूर्वपद संख्यावाची होने के कारण) या विशेष अर्थ (कमल) में **बहुव्रीहि समास**।
2. **सागरजल**
    - *सटीक समास विग्रह:* सागर का जल।
    - *समास का नाम:* **तत्पुरुष समास** (संबंध तत्पुरुष, 'का' परसर्ग का लोप होने के कारण)।
3. **ज्योतिर्जल**
    - *सटीक समास विग्रह:* ज्योति (प्रकाश) से युक्त जल या ज्योति रूपी जल।
    - *समास का नाम:* **कर्मधारय समास** (विशेषण-विशेष्य या उपमेय-उपमान का संबंध होने के कारण)।
4. **शतमुख**
    - *सटीक समास विग्रह:* शत (सौ) मुख हैं जिसके अर्थात् भारतमाता (विशेष चेतना)।
    - *समास का नाम:* **बहुव्रीहि समास** (अन्य पद प्रधान होने के कारण)।

अलंकार: समझ और प्रयोग

(क) कविता में अनुप्रास अलंकार (वर्ण-आवृत्ति) के प्रामाणिक उदाहरण:

1. **"धोता शुचि चरण युगल"** — यहाँ 'च' वर्ण की आवृत्ति 'चरण' और 'चुलुक' (या नाद) के रूप में या 'श'/'च' की संगति के कारण अनुप्रास की छटा है।
2. **"धवल धार हार गले"** — यहाँ 'ध' वर्ण की आवृत्ति 'धवल' और 'धार' में एक से अधिक बार हुई है।

3. **"शतमुख-शतरव-मुखरे!"** — यहाँ 'श' और 'म' वर्ण की आवृत्ति क्रमिक रूप से होने के कारण अत्यंत सुंदर अनुप्रास अलंकार है।

(ख) कविता में रूपक अलंकार (अभेद आरोप) के प्रामाणिक उदाहरण:

1. **"मुकुट शुभ्र हिम-तुषार"** — यहाँ कवि ने हिमालय की बर्फ (हिम-तुषार) पर भारतमाता के 'मुकुट' का सीधा अभेद आरोप किया है, जिससे यह रूपक अलंकार का उत्कृष्ट उदाहरण है।
2. **"धवल धार हार गले"** — यहाँ गंगा नदी की स्वच्छ सफ़ेद धारा (धवल धार) पर भारतमाता के गले के 'हार' का आरोप किया गया है।
3. **"तरु-तृण-वन-लता वसन"** — यहाँ पेड़-पौधों और वन-लताओं पर साक्षात् भारतमाता के वस्त्र (वसन) का अभेद आरोप है।

गतिविधियाँ (मिलकर लें शपथ)

प्रश्न: "तरु-तृण-वन-लता वसन/अंचल में खचित सुमन" — वन, लता, पुष्प आदि भारत के अमूल्य प्राकृतिक संसाधन हैं। इनके संरक्षण के लिए सरकार द्वारा बनाए गए अधिनियमों के बारे में सूचना एकत्रित कीजिए और वन संरक्षण के लिए बनाए नियमों पर विचार कीजिए।

(क) पर्यावरण और वन संरक्षण के लिए प्रमुख सरकारी अधिनियम (Acts)

भारत सरकार ने अपनी अमूल्य प्राकृतिक संपदा, वनों और वन्यजीवों की सुरक्षा के लिए समय-समय पर कई कड़े कानून बनाए हैं, जिनमें से मुख्य निम्नलिखित हैं:

1. **वन (संरक्षण) अधिनियम, 1980 (Forest Conservation Act, 1980):**

यह कानून वनों की अंधाधुंध कटाई को रोकने के लिए बनाया गया है। इसके तहत किसी भी वन भूमि को केंद्र सरकार की अनुमति के बिना गैर-वानिकी (जैसे उद्योग या निर्माण) कार्यों के लिए उपयोग में नहीं लाया जा सकता।

2. **पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986 (Environment Protection Act, 1986):**

यह एक व्यापक कानून है जो जल, वायु, भूमि और वनों सहित संपूर्ण पर्यावरण की रक्षा और उसमें सुधार करने के लिए सरकार को कड़े कदम उठाने के अधिकार देता है।

3. **वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 (Wildlife Protection Act, 1972):**

यह अधिनियम वनों में रहने वाले दुर्लभ जीवों, पक्षियों और पेड़-पौधों की प्रजातियों के अवैध शिकार और व्यापार पर पूरी तरह रोक लगाता है।

4. **राष्ट्रीय हरित अधिकरण अधिनियम, 2010 (National Green Tribunal Act):**

इसके तहत पर्यावरण और वनों से जुड़े कानूनी मामलों की त्वरित सुनवाई के लिए 'एनजीटी' (NGT) की स्थापना की गई है।

(ख) वन संरक्षण के नियमों पर विचार और सुझाव

वनों को बचाने के लिए केवल सरकारी कानून ही काफी नहीं हैं, बल्कि समाज के स्तर पर भी निम्नलिखित नियमों और विचारों का पालन दृढ़ता से किया जाना चाहिए:

- **वृक्षारोपण अनिवार्य नियम:** 'एक पेड़ काटने पर दस नए पेड़ लगाने' के नियम को कानूनी और सामाजिक रूप से अनिवार्य बनाया जाना चाहिए।
- **अवैध कटाई पर पूर्ण प्रतिबंध:** ग्रामीण और वन क्षेत्रों में लकड़ी की अवैध तस्करी को रोकने के लिए आधुनिक तकनीकों (जैसे ड्रोन निगरानी) का उपयोग होना चाहिए।
- **दावानल (जंगल की आग) से सुरक्षा:** गर्मियों के दिनों में वनों में लगने वाली आग को नियंत्रित करने के लिए वन विभाग के पास विशेष और त्वरित सुरक्षा तंत्र होना चाहिए।
- **सामुदायिक भागीदारी (जन-जागृति):** 'वन महोत्सव' जैसे कार्यक्रमों को केवल औपचारिकता न बनाकर विद्यालयों और स्थानीय समुदायों को सीधे तौर पर वनों को गोद लेने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

भाषा संगम: 'शस्य' (उपज/फसल) शब्द के प्रांतीय भाषाई रूप

संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित विभिन्न भारतीय भाषाओं में 'शस्य' (खेती से उत्पन्न पैदावार) को निम्नलिखित सुंदर नामों से पुकारा जाता है, जो देश की कृषि-संस्कृति की व्यापकता को सिद्ध करता है:

- **संस्कृत:** शस्यम्
- **मराठी / कोंकणी:** पीक
- **गुजराती:** ऊपज, पेदाश
- **नेपाली / सिंधी / पंजाबी:** उपज, पैदावार
- **बांग्ला / ओड़िआ:** फसल, खेति
- **असमिया:** शस्य, खेति, फचल, कृषि जात वस्तु
- **तेलुगु:** पंट
- **तमिल:** विळैच्चल्
- **मलयालम:** विळवु
- **कन्नड़:** बेळे फसलु
- **मणिपुरी:** महै मरोङ् थाबा पोत्थोक

Links और References (खोजबीन)

अध्याय के अंतर्गत दिए गए प्रामाणिक और डिजिटल संदर्भों का विवरणात्मक विवरण निम्नलिखित है:

- 🔗 **NCERT Official - भारति, जय, विजयकरे ! (काव्य पाठ):** https://youtu.be/zZoAghETdgl — विषय विशेषज्ञों द्वारा महाकवि निराला की इस रचना को राग और लय के साथ प्रस्तुत करने का आधिकारिक वीडियो संदर्भ।
- 🔗 **निराला की शास्त्रीय रचनाएँ एवं सरस्वती वंदना:** https://youtu.be/0vfpBMozOXY — निराला जी द्वारा रचित 'वर दे, वीणावादिनि वर दे!' और उनकी संस्कृतनिष्ठ छायावादी लेखन शैली पर वृत्तचित्र।

- 🔗 **डिजिटल शब्दकोश पोर्टल (शिक्षा मंत्रालय):** https://shabd.education.gov.in/lexicon.jsp — 'शस्य', 'गर्जितोर्मि' और 'हिम-तुषार' जैसे विशिष्ट शब्दों की भारतीय भाषाओं में प्रामाणिक तुलना हेतु उपयोगी डिजिटल मंच।